

औरत ज्ञात

स्टोरीलाइन

एक ऐसे व्यक्ति की कहानी जिसकी घोड़ों की रेस के दौरान एक महाराजा से दोस्ती हो जाती है। महाराजा एक दिन उसे अपने यहाँ प्रोजेक्टर पर कुछ कामुक फ़िल्में दिखाता है। उन फ़िल्मों को माँग कर वह व्यक्ति अपने घर ले जाता है और अपनी पत्नी को दिखाता है। इससे उसकी पत्नी नाराज़ हो जाती है। पत्नी की नाराज़गी से वह बहुत लज्जित होता है। अगले दिन जब वह दोपहर के खाने के बाद ऑफ़िस से घर आता है तो पाता है कि उसकी पत्नी अपनी बहनों और सहेलियों के साथ प्रोजेक्टर पर वही फ़िल्में देख रही है।

महाराजा ग से रेस कोर्स पर अशोक की मुलाक़ात हुई। इसके बाद दोनों बेतकल्लुफ़ दोस्त बन गए।

महाराजा ग को रेस के घोड़े पालने का शौक ही नहीं ख़ब्त था। उसके अस्तबल में अच्छी से अच्छी नस्ल का घोड़ा मौजूद था और महल में जिसके गुंबद रेस कोर्स से साफ़ दिखाई देते थे। तरह तरह के अजाइब मौजूद थे।

अशोक जब पहली बार महल में गया तो महाराजा ग ने कई घंटे सर्फ़ करके उसको अपने तमाम नवादिर दिखाए। ये चीज़ें जमा करने में महाराजा को सारी दुनिया का दौरा करना पड़ा था। हर मुल्क का कोना कोना छानना पड़ा था। अशोक बहुत मुतअस्सिर हुआ। चुनांचे उसने नौजवान महाराजा ग के ज़ौक-ए-इंतिखाब की ख़ूब दाद दी।

एक दिन अशोक घोड़ों के टप लेने के लिए महाराजा के पास गया तो वो डार्क रूम में फ़िल्म देख रहा था। उसने अशोक को वहीं बुलवा लिया। स्केटन मिलीमीटर फ़िल्म थे जहाँ महाराजा ने खुद अपने कैमरे से लिए थे। जब प्रोजेक्टर चला तो पिछली रेस पूरी की पूरी पर्दे से दौड़ गई। महाराजा का घोड़ा इस रेस में वन आया था।

इस फ़िल्म के बाद महाराजा ने अशोक की फ़र्माइश पर और कई फ़िल्म दिखाए।

स्विटज़रलैंड, पैरिस, न्यूयार्क, होनो लूलू, हवाई, वादी-ए-कश्मीर... अशोक बहुत महज़ूज़ हुआ ये फ़िल्म कुदरती रंगों में थे।

अशोक के पास भी स्केटन मिलीमीटर कैमरा और प्रोजेक्टर था। मगर उसके पास फ़िल्मों का इतना ज़ख़ीरा नहीं था। दरअसल उसको इतनी फ़ुर्सत ही नहीं मिलती थी कि अपना ये शौक जी भर के पूरा करसके।

महाराजा जब कुछ फ़िल्म दिखा चुका तो उसने कैमरे में रोशनी की और बड़ी बेतकल्लुफ़ी से अशोक की रान पर धप्पा मार कर कहा, “और सुनाओ दोस्त।”

अशोक ने सिगरेट सुलगाया, “मज़ा आगया फ़िल्म देख कर।”

“और दिखाऊँ।”

“नहीं नहीं।”

“नहीं भई, एक ज़रूर देखो... मज़ा आजाएगा तुम्हें,” ये कह कर महाराजा ग ने एक सन्दूक़चा खोल कर एक रील निकाली और प्रोजेक्टर पर चढ़ा दी, “ज़रा इत्मिनान से देखना।”

अशोक ने पूछा, “क्या मतलब?”

महाराजा ने कमरे की लाईट ऑफ़ कर दी, “मतलब ये कि हर चीज़ ग़ौर से देखना, ये कह कर उसने प्रोजेक्टर का स्विच दबा दिया।

पर्दे पर चंद लम्हात सिर्फ़ सफ़ेद रोशनी थरथराती रही, फिर एक दम तस्वीरें शुरू होगईं। एक अलिफ़ नंगी औरत सोफे पर लेटी थी। दूसरी सिंगार मेज़ के पास खड़ी अपने बाल संवार रही थी।

अशोक कुछ देर ख़ामोश बैठा देखता रहा... इसके बाद एक दम उसके हलक़ से अजीब-ओ-ग़रीब आवाज़ निकली। महाराजा ने हंस कर उससे पूछा, “क्या हुआ?”

अशोक के हलक़ से आवाज़ फंस फंस कर बाहर निकली, “बंद करो यार, बंद करो।”

“क्या बंद करो?”

अशोक उठने लगा, महाराजा ग ने उसे पकड़ कर बिठा दिया, “ये फ़िल्म तुम्हें पूरे का पूरा देखना पड़ेगा।”

फ़िल्म चलता रहा। पर्दे पर ब्रह्मनगी मुँह खोले नाचती रही। मर्द और औरत का जिन्सी रिश्ता मादरज़ाद उर्यानी के साथ थिरकता रहा। अशोक ने सारा वक़्त बेचैनी में काटा। जब फ़िल्म बंद हुआ और पर्दे पर सिर्फ़ सफ़ेद रोशनी थी तो अशोक को ऐसा महसूस हुआ कि जो कुछ उसने देखा था। प्रोजेक्टर की बजाय उसकी आँखें फेंक रही हैं।

महाराजा ग ने कमरे की लाईट ऑन की और अशोक की तरफ़ देखा और एक ज़ोर का क़हक़हा लगाया, “क्या होगया है तुम्हें?”

अशोक कुछ सिकुड़ सा गया था। एक दम रोशनी के बाइस उसकी आँखें भींची हुई थीं। माथे पर पसीने के मोटे मोटे क़तरे थे। महाराजा ग ने ज़ोर से उसकी रान पर धप्पा मारा। और इस क़दर बेतहाशा हंसा कि उसकी आँखों में आँसू आगए। अशोक सोफे पर से उठा। रूमाल निकाल कर अपने माथे का पसीना पोंछा, “कुछ नहीं यार।”

“कुछ नहीं क्या... मज़ा नहीं आया।”

अशोक का हलक़ सूखा हुआ था। थूक निगल कर उसने कहा, “कहाँ से लाए ये फ़िल्म?”

महाराजा ने सोफे पर लेटते हुए जवाब दिया, “पैरिस से... पेरी... पेरी!”

अशोक ने सर को झटका सा दिया, “कुछ समझ में नहीं आता।”

“क्या?”

“ये लोग... मेरा मतलब है कैमरे के सामने ये लोग कैसे...”

“यही तो कमाल है... है कि नहीं?”

“है तो सही।” ये कह कर अशोक ने रूमाल से अपनी आँखें साफ़ कीं, “सारी तस्वीरें जैसे मेरी आँखों में फंस गई हैं।”

महाराजा ग उठा, “मैंने एक दफ़ा चंद लेडीज़ को ये फ़िल्म दिखाया”

अशोक चिल्लाया, “लेडीज़ को?”

“हाँ हाँ... बड़े मज़े ले ले कर देखा उन्होंने।”

“ग़लत।”

महाराजा ने बड़ी संजीदगी के साथ कहा, “सच कहता हूँ... एक दफ़ा देख कर दूसरी दफ़ा फिर देखा। भींचती, चिल्लाती और हंसती रहीं।”

अशोक ने अपने सर को झटका सा दिया, “हद होगई है... मैं तो समझता था वो... बेहोश होगई होंगी।”

“मेरा भी यही खयाल था, लेकिन उन्होंने ख़ूब लुत्फ़ उठाया।”

अशोक ने पूछा, “क्या यूरोपियन थीं?”

महाराजा ग ने कहा, “नहीं भाई... अपने देस की थीं... मुझसे कई बार ये फ़िल्म और प्रोज़ेक्टर मांग कर ले गईं... मालूम नहीं कितनी सहेलियों को दिखा चुकी हैं।”

“मैंने कहा...” अशोक कुछ कहते कहते रुक गया।

“क्या?”

“एक दो रोज़ के लिए ये फ़िल्म दे सकते हो मुझे?”

“हाँ हाँ, ले जाओ!” ये कह कर महाराजा ने अशोक की पसलियों में ठोंका दिया, “साले किसको दिखाएगा।”

“दोस्तों को।”

“दिखा, जिसको भी तेरी मर्ज़ी!” ये कह कर महाराजा ग ने प्रोज़ेक्टर में से फ़िल्म का स्पूल निकाला। उसको दूसरे स्पूल चढ़ा दिया और डिब्बा अशोक के हवाले कर दिया, “ले पकड़... ऐश कर!”

अशोक ने डिब्बा हाथ में ले लिया तो उसके बदन में झुरझरी सी दौड़ गई। घोड़ों के टप लेना भूल गया और चंद मिनट इधर उधर की बातें करने के बाद चला गया।

घर से प्रोज़ेक्टर ले जा कर उसने कई दोस्तों को फ़िल्म दिखाया। तक्ररीबन सबके लिए इंसानियत की ये उर्यानी बिल्कुल नई चीज़ थी। अशोक ने हर एक का रद्द-ए-अमल नोट किया। बा'ज़ ने ख़फ़ीफ़ सी घबराहट और फ़िल्म का एक एक इंच गौर से देखा।

बा'ज़ ने थोड़ा सा देख कर आँखें बंद करलीं। बा'ज़ आँखें खुली रखने के बावजूद फ़िल्म को तमाम-ओ-कमाल तौर पर न देख सके। एक बर्दाश्त न कर सका और उठ कर चला गया।

तीन-चार रोज़ के बाद अशोक को फ़िल्म लौटाने का ख़याल आया तो उसने सोचा क्यों न अपनी बीवी को दिखाऊँ चुनांचे वो प्रोज़ेक्टर अपने घर ले गया। रात हुई तो उसने अपनी बीवी को बुलाया। दरवाज़े बंद किए। प्रोज़ेक्टर का कनेक्शन वगैरा ठीक किया। फ़िल्म निकाला, उसको फिट किया, कमरे की बत्ती बुझाई और फ़िल्म चला दिया।

पर्दे पर चंद लम्हात सफ़ेद रोशनी थरथराई। फिर तस्वीरें शुरू हुईं। अशोक की बीवी ज़ोर से चीखी, तड़पी, उछली। उसके मुँह से अजीब-ओ-गरीब आवाज़ निकलीं। अशोक ने उसे पकड़ कर बिठाना चाहा तो उसने आँखों पर हाथ रख लिए और चीखना शुरू कर दिया, “बंद करो... बंद करो।”

अशोक ने हंस कर कहा, “अरे भई देख लो... शरमाती क्यों हो?”

“नहीं नहीं,” ये कह कर उसने हाथ छुड़ा कर भागना चाहा।

अशोक ने उसको ज़ोर से पकड़ लिया। वो हाथ जो उसकी आँखों पर था, एक तरफ़ खींचा। इस खींचातानी में दफ़ातन अशोक की बीवी ने रोना शुरू कर दिया। अशोक के ब्रेक से लग गई। उसने तो महज़ तफ़रीह की खातिर अपनी बीवी को फ़िल्म दिखाया था।

रोती और बड़बड़ाती उसकी बीवी दरवाज़ा खोल कर बाहर निकल गई। अशोक चंद लम्हात बिल्कुल ख़ालीउज़्ज़हन बैठा नंगी तस्वीरें देखता रहा। जो हैवानी हरकात में मशगूल थीं। फिर एक दम उसने मुआमले की नज़ाकत को महसूस किया।

इस एहसास ने उसे ख़जालत के समुंदर में ग़र्क़ कर दिया। उसने सोचा मुझसे बहुत ही नाज़ेबा हरकत सरज़द हुई, लेकिन हैरत है कि मुझे इसका ख़याल तक न आया... दोस्तों को दिखाया था। ठीक था, घर में और किसी को नहीं, अपनी बीवी... अपनी बीवी को... उसके माथे पर पसीना आगया।

फ़िल्म चल रहा था। मादरज़ाद ब्रहनगी मुख्तलिफ़ आसन इख्तियार करती दौड़ रही थी। अशोक ने उठ कर स्विच ऑफ़ कर दिया... पर्दे पर सब कुछ बुझ गया। मगर उसने अपनी निगाहें दूसरी तरफ़ फेर लीं।

उसका दिल-ओ-दिमाग़ शर्मसारी में डूबा हुआ था। ये एहसास उसको चुभ रहा था कि उससे एक निहायत ही नाज़ेबा... निहायत ही वाहियात हरकत सरज़द हुई। उसने यहां तक सोचा कि वो कैसे अपनी बीवी से आँख मिला सकेगा।

कमरे में घुप अंधेरा था। एक सिगरेट सुलगा कर उसने एहसास-ए-नदामत को मुख्तलिफ़ ख़यालों के ज़रिये से दूर करने की कोशिश की मगर कामयाब न हुआ। थोड़ी देर दिमाग़ में इधर उधर हाथ मारता रहा। जब चारों तरफ़ से सरज़निश हुई तो ज़च-बच होगया और एक

अजीब सी ख्वाहिश उसके दिल में पैदा हुई कि जिस तरह कमरे में अंधेरा है उसी तरह उसके दिमाग पर भी अंधेरा छा जाये।

बार बार उसे ये चीज़ सता रही थी, “ऐसी वाहियात हरकत और मुझे खयाल तक न आया।”

फिर वो सोचता, बात अगर सास तक पहुंच गई... सालियों को पता चल गया। मेरे मुतअल्लिक क्या राय कायम करेंगे ये लोग कि ऐसे गिरे हुए अखलाक का आदमी निकला... ऐसी गंदी ज़ेहनियत कि अपनी बीवी को...

तंग आकर अशोक ने सिगरेट सुलगाया। वो नंगी तस्वीरें जो वो कई बार देख चुका था उसकी आँखों के सामने नाचने लगीं... उनके अक़ब में उसे अपनी बीवी का चेहरा नज़र आता। हैरान-ओ-परेशान, जिसने ज़िंदगी में पहली बार उफ़ूनत का इतना बड़ा ढेर देखा हो। सर झटक कर अशोक उठा और कमरे में टहलने लगा। मगर इससे भी उसका इज़्तिराब दूर न हुआ।

थोड़ी देर के बाद वो दबे पांव कमरे से बाहर निकला। साथ वाले कमरे में झांक कर देखा। उसकी बीवी मुँह सर लपेट कर लेटी हुई थी। काफ़ी देर खड़ा सोचता रहा कि अंदर जा कर मुनासिब-ओ-मौज़ू अल्फ़ाज़ में उससे माफ़ी मांगे, मगर खुद में इतनी ज़ुरत पैदा न कर सका। दबे पांव लौटा और अंधेरे कमरे में सोफे पर लेट गया। देर तक जागता रहा, आखिर सो गया।

सुबह सवेरे उठा। रात का वाक़ेआ उसके ज़ेहन में ताज़ा होगया। अशोक ने बीवी से मिलना मुनासिब न समझा और नाश्ता किए बग़ैर निकल गया।

ऑफ़िस में उसने दिल लगा कर कोई काम न किया। ये एहसास उसके दिल-ओ-दिमाग़ के साथ चिपक कर रह गया था, “ऐसी वाहियात हरकत और मुझे खयाल तक न आया।”

कई बार उसने घर बीवी को टेलीफ़ोन करने का इरादा किया मगर हर बार नंबर के आधे हिन्दसे घुमा कर रीसिवर रख दिया। दोपहर को घर से जब उसका खाना आया तो उसने नौकर से पूछा, “मेमसाहब ने खाना खालिया?”

नौकर ने जवाब दिया, “जी नहीं... वो कहीं बाहर गए हैं।”

“कहाँ?”

“मालूम नहीं साहब!”

“कब गए थे?”

“ग्यारह बजे।”

अशोक का दिल धड़कने लगा। भूक गायब होगई, दो-चार निवाले खाए और हाथ उठा लिया। उसके दिमाग में हलचल मच गई थी। तरह तरह के खयालात पैदा हो रहे थे... ग्यारह बजे... अभी तक लौटी नहीं... गई कहाँ है... माँ के पास? क्या वो उसे सब कुछ बता देगी? ज़रूर बताएगी। माँ से बेटी सब कुछ कह सकती है... हो सकता है बहनों के पास गई हो... सुनेंगी तो क्या कहेंगी? दोनों मेरी कितनी इज़्ज़त करती थीं, जाने बात कहाँ से कहाँ पहुंचेगी... ऐसी वाहियात हरकत और मुझे खयाल तक न आया...

अशोक ऑफ़िस से बाहर निकल गया। मोटर ली और इधर उधर आवारा चक्कर लगाता रहा। जब कुछ समय में न आया तो उसने मोटर का रुख घर की तरफ़ फेर दिया, “देखा जाएगा जो कुछ होगा।”

घर के पास पहुंचा तो उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। जब लिफ़्ट एक धक्के के साथ ऊपर उठी तो उसका दिल उछल कर उसके मुँह में आगया।

लिफ़्ट तीसरी मंज़िल पर रुकी। कुछ देर सोच कर उसने दरवाज़ा खोला। अपने फ़्लैट के पास पहुंचा तो उसके क़दम रुक गए। उसने सोचा कि लौट जाये, मगर फ़्लैट का दरवाज़ा खुला और उसका नौकर बीड़ी पीने के लिए बाहर निकला। अशोक को देख कर उसने बीड़ी हाथ में छुपाई और सलाम किया। अशोक को अंदर दाखिल होना पड़ा।

नौकर पीछे पीछे आ रहा था। अशोक ने पलट कर उससे पूछा, “मेमसाहब कहाँ हैं?”

नौकर ने जवाब दिया, “अंदर कमरे में?”

“और कौन है?”

“उनकी बहनें साहब... कोलाबे वाले साहब की मेमसाहब और वो पार्टी बाइयाँ!”

ये सुन कर अशोक बड़े कमरे की तरफ़ बढ़ा। दरवाज़ा बंद था। उसने धक्का दिया। अंदर से अशोक की बीवी की पतली मगर तेज़ आवाज़ आई, “कौन है?”

नौकर बोला, “साहब।”

अंदर कमरे में एक दम गड़बड़ शुरू होगई। चीखें बुलंद हुईं, दरवाज़ों की चटखनियाँ खुलने की आवाज़ें आईं। खट-खट, फट-फट हुईं। अशोक कोरीडोर से होता पिछले दरवाज़े से कमरे

में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि प्रोजेक्टर चल रहा और पर्दे पर दिन की रोशनी में धुँदली धुँदली इंसानी शक्लें एक नफ़रतअंगेज़ मकानिकी यक आहंगी के साथ हैवानी हरकात में मशगूल हैं।

अशोक बेतहाशा हँसने लगा।

TALENTALKS